IOSR Journal of Humanities And Social Science (IOSR-JHSS)
Volume 24, Issue 6, Ser. 1 (June. 2019) 83-84
e-ISSN: 2279-0837, p-ISSN: 2279-0845.
www.iosrjournals.org

वैश्वीकरण के दौर में शैक्षिक स्थिति

बृजेश कुमार यादव
(शोध छात्र) शिक्षक शिक्षा संकाय, टी0डी0 पी0जी0 कॉलेज, जौनपुर

डॉ0 विनय सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, (शिक्षक शिक्षा संकाय) टी0डी0 पी0जी0 कॉलेज, जौनपुर

प्रस्तावना–

वैश्वीकरण एक विश्वव्यापी प्रक्रिया है। वैश्वीकरण वर्तमान समय के व्यापारिक माहौल की एक ऐसी अवधारणा है जो पूरे विश्व को एक मण्डल अथवा केन्द्र बनाने की ओर अग्रसर है। वैश्विक ग्राम की संकल्पना को साकार करने का लक्ष्य लेकर बढ़ती वैश्वीकरण की की प्रक्रिया ने समाज के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। इस शोध पत्र में अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह है कि वैश्वीकरण के प्रक्रिया ने समाज के सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र शिक्षा को व्यापक रूप से प्रभावित है। वैश्वीकरण मूलतः एक आर्थिक प्रक्रिया है। क्योंकि वर्तमान समय में बाजार की नितियों सभी स्थानों पर लागू होती है। चाहे वह शिक्षा ही क्यों न हो। अतः वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने शिक्षा के सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों रूपों प्रभावित किया है।

वैश्वीकरण की नकारात्मक प्रवृत्ति के अन्तर्गत निम्नलिखित परिणाम परिलक्षित होते हैं।

वैश्वीकरण के कारण शिक्षा में आर्थिकायन की प्रवृत्ति बढ़ी है। शिक्षा एक बाजार की विषयवस्तु बनकर रह गयी है। इसको उत्पादकता से जोड़कर देखा जाने लगा है। देश के छात्रों को संसाधन एवं उत्पाद के रूप में प्रस्तुत किया जाने लगा है। शिक्षा के उद्देश्यों में भौतिक समृद्धि को सर्वोपरि रखा जाने लगा है। पाठ्यक्रम में केवल विज्ञान एवं तकनीकी विषयवस्तु का समावेश है। अध्यात्म, धर्म व नैतिकता का स्थान दिन–प्रतिदिन कम होता जा रहा है जो शिक्षाशास्त्रीयों को नये चिन्तन की तरफ अग्रसर हो गया है। शिक्षा आम व्यक्ति व निम्न वर्ग की पहुँच से दूर व सामाजिक व क्षेत्रीय विषमता को बढ़ावा देने वाली बन रही है। तथा विद्यार्थियों में अनुशासनहीनता व असंतोष को बढ़ावा मिल रहा है।

वैश्वीकरण के परिणाम स्वरूप विद्यार्थियों में पाश्चात्यीकरण व आधुनिकीकरण की प्रवृत्ति के अनुसार को बल मिला है। जिसमें विद्यार्थियों में नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का पतन एवं सांस्कृतिक ऱ्हास हुआ है।

वर्तमान परिदृश्य में बढ़ते हुए सामाजिक वैमनस्य, वर्ग भेद सामाजिक स्तरीकरण के बदलते स्वरूप में आज भी फिर से शिक्षा में वर्गहीन समतामूलक व बौद्धिक समाज को स्थापित करने के लिए वेदान्त दर्शन की अध्ययन की प्रासंगिकता महत्वपूर्ण हो गयी है।

वर्तमान शिक्षा के वैश्वीकरण के प्रभाव से उद्देश्यहीनता की शिकार है। छात्रों को अपने गन्तव्य का ही ज्ञान नहीं है। अतः छात्रों में उनका कर्तव्य पथ आलोकित करने के लिए ''सा विद्या या विमुक्तिये'' जैसे उच्च आदर्श को शिक्षा के लक्ष्य के रूप में स्थापित किया जाना होगा।

वर्तमान शैक्षिक वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में तकनीकी एवं वैज्ञानिक शिक्षा को आवश्यकता से अधिक बल मिला है। निःसंदेह यह व्यक्ति एवं समाज के भौतिक उन्नयन हेतु आवश्यक है। अतः इस शोध पत्र के निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है दर्शन आधारित शिक्षा भी वैश्वीकरण की संकल्पना को कहीं न कहीं प्रभावित किया है।

प्रस्तुत शोध पत्र में वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में प्राचीन एवं आधुनिकता का अद्भुत समन्वय स्थापित करने का प्रयास किया है। भारतीय शिक्षा अर्थात् शैक्षिक वैश्वीकरण को शोध कार्य का अभिन्न अंग बनाया गया है शैक्षिक वैश्वीकरण की प्रक्रिया को शिक्षा में अधिक समुन्नत व्यवहारिक व प्रायोगिक बनाया गया है।

वैश्वीकरण एवं शिक्षा के इस शोध पल में एक ऐसी नवीन चिन्तन धारा के विकसित करने का प्रयास किया गया है जो शिक्षार्थियों को वैश्वीकरण के शिक्षा पर प्रभाव व इसके द्वारा उदित शैक्षिक विसंगतियों के निराकरण में वैश्वीकरण की भूमिका का पुर्नविवेचन करने को प्रेरित करेगी।

इस शोध पत्र को सारगर्भित रूप में यदि हम कहें तो भारतीय दर्शन की अभेद दृष्टि विभिन्नता में एकता व्यक्तित्व रूपान्तरण (पाशविक्ता से मानवीयता की ओर) व्यक्ति की गरिमा का आदर समष्टि दृष्टि वसुधेव कुटुम्बकम सर्वे भवन्तु सुखिन्नः विश्व प्रेम आदि ऐसे सिद्धान्त हैं जिसका प्रयोग यदि आधुनिक भारतीय शिक्षा में किया जाय तो वह दिन दूर नहीं जब भारत विश्व स्तर पर शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका में शिक्षा का प्रतिनिधि करेगा।

वेदान्त दर्शन प्रत्येक प्राणी मात्र के कल्याण हेतु कृत संकल्पित है यह दर्शन मानता है कि सभी जीवों में एक ही ईश्वर का वास है इसने ही संस्कृति में प्रेम एकता उदारता सहानुभूति एवं विश्व दृष्टि को बढ़ावा दिया है। इसमें

अनवरत इस सम्पूर्ण शोध अध्ययन में ''वैश्वीकरण और वेदान्त दर्शन आधारित शिक्षा की संकल्पना'' को अधिक समृद्धि, समुन्नत प्रगतिशील व उपादेय बनाने हेतु निम्नलिखित सुझाव दिये चजा सकते हैं।

शिक्षा के वैश्वीकरण की प्रक्रिया को वसुधैव कुटुम्बकम एवं सर्वे भवन्तु सुखिनः की अंतः प्रेरणा से अनुप्राणित किया जाय।

वैश्वीकरण शिक्षा को इस प्रकार विकसित किया जाए कि इससे परस्पर सद्भावना भातृत्व एवं सहयोग का विकास हो।

शिक्षा में अधिक से अधिक जनतांत्रिक भावना का समावेश हो क्योंकि शैक्षिक वैश्वीकरण हेतु जनतंत्र सर्वोत्तम प्रणाली है।

शिक्षा ऐसी हो जो आर्थिक विकास के साथ–साथ सामाजिक सांस्कृतिक नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास करने हेतु सक्षम हो।

राष्ट्रीयता की शिक्षा के साथ–साथ विश्व बन्धुत्व की भावना व अन्तराष्ट्रीय अवबोध की भावना का विकास हो।

शिक्षा का गन्तव्य मानव कल्याण अर्थात सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयः है।

वैश्विक शिक्षा के अन्तर्गत मूल शिक्षा एवं नैतिक शिक्षा को अनिवार्य किया जाय वैश्विक शिक्षा की संकल्पना को मूर्त रूप प्रदान किया जा सके।

निष्कर्ष–

उदारीकरण और निजीकरण वैश्वीकरण के विकास के प्रमुख तत्व उभरकर सामने आते है। जो सम्पूर्ण विश्व जगत के विचारों को प्रभावित करते है। वर्तमान कालीन स्थिति शैक्षिक स्थिति के भी प्रभावित कर रहे हैं। सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को वैश्वीकरण ने प्रभावित किया है जिसमें मानव के विचारों में वैश्विक क्रान्ती आयी है। अध्ययनरत लोगों में गतिशीलता, समझौता, वाद–विवाद, अनुनय, संगठन और नेतृत्व और प्रबन्धन कौशल विकसित करने की आवश्यता है बढ़ावा दिया है। भिन्न–भिन्न देशों के बीच विभिन्न स्तरों पर संचार कान्ती को प्रोत्साहित किया है। इस प्रकार वैश्वीकरण ने शिक्षा व्यवस्था के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि, अनुशासन, कौशल इत्यादि सभी को प्रभावित किया है जो नये युग की चेतना को प्रोत्साहित करने में प्रयत्नशील है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

एम0एच0आर0डी0 (1986–1992), नेशनल पालिसी आन एजुकेशन, नई दिल्ली

दोसी, प्रवीण (2011), भारतीय शिक्षा के माध्यम से सामान्य एकता, अंतराष्ट्रीय सम्मेलन शान्ति समरसता उदयपुर 26–27 मार्च, 2011

ब्रेमेल्ड थियोडोर (1975), शिक्षा की दार्शनिक प्रजातियाँ सांस्कृति परिप्रेक्ष्य– राजस्थान, जयपुर

वैश्वीकरण और शिक्षा की चुनौतियाँ– अमर उजाला, दैनिक समाचार पत्र, दिनांक 21 जनवरी 2016, सम्पादकीय, पृष्ठ–7

विकिपीडिया, इण्टरनेट साइट

□